ISSN 2347-4041

प्रथमा विश्ववारा नां संस्कृतिं स्वयुगानुगाम्। संस्कारचेतना धत्ते वसुधैव कुटुम्बकम्॥

वर्ष-8
अंक-6
फरवरी-2019
Impact Factor-3.245
UGC Approved No. 41232

साहित्य, शिक्षा,
वाणिज्य, मानविकी,
विज्ञान एवं सभी विषयों की

संस्कार चेतना

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका (मासिक)

INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

प्रधान संपादक
डॉ. विजय दत्त शर्मा, पूर्व निदेशक,
हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला

संपादक
डॉ. केवल कृष्ण

शोध चेतना अकादमी
वसुधैव कुटुम्बकम्' संस्कृति सेवा आयाम (पंजी.)

वैश्विक स्तर पर भारतीय संगीत — 177-180
डॉ. प्रतिभा शर्मा

मिथकों पर प्रहार : सूअरदान — 181-184
पुनीता

श्रीमद्भगवद्गीता एवं शिक्षानीति — 185-187
डॉ. विदुषी

भारत में भूमि स्वामित्व : प्राक् औपनिवेशिक काल का एक अध्ययन — 188-193
गौरव कौशिक

आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में साम्प्रदायिक चेतना — 194-199
डॉ. सुभाष चंद, डॉ. विजेन्द्र कुमार

Solving Systems of Volterra Integral Equations of Second Kind by Trapezoidal Rule — 200-204
Sukhvinder

Search for wholeness in the fiction of Doris Lessing — 205-209
Parshant Kumar

A Study on Green Marketing: A strategy for Sustainable Development — 210-215
Rupali Lamba

Role of Financial Institutions in The Growth of India — 216-220
Panju

ऐतिहासिक स्रोत के रूप में कुमार गुप्त प्रथम के सोने के सिक्कों का अध्ययन — 221-225
[illegible]

वर्तमान हिंदी कथा साहित्य में लिव-इन रिलेशनशिप — 226-233
डॉ. सुभाष चंद, डॉ. विजेन्द्र कुमार

A New Dimension in Indian Banking: Cashless and [illegible] — 234-237
Prince Singla

मुगल साम्राज्य के पतन पर ऐतिहासिक दृष्टिकोण — 238-243
मनजीत सिंह

साहित्य एवं आलोचना — 244-247
डॉ. मुन्नी देवी

स्मृतियों में न्याय-व्यवस्था — 248-252
डॉ. पी. सी. शर्मा

Yogic Practices Reduced the Stress Level of Teacher Trainees of Different Stream — 253-261
Dr Bhanvra Kumari

ance
-91
-95
103
107
114
119
126
130
133
136
139
142
147
150
151
153
en
167
176

ISSN : 2347-4041 UGC Approved No. 41232
Impact Factor 3.245
संस्कार चेतना अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका
वर्ष 8, अंक 6, फरवरी 2019

वर्तमान हिंदी कथा साहित्य में लिव-इन रिलेशनशिप

डॉ॰ सुभाष चंद
गांव व डाक खाना काकौत
जिला कैथल (हरियाणा)

डॉ॰ बिजेन्द
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
राधा-कृष्ण सनातन धर्म (स्नातकोत्तर)
महाविद्यालय, कैथल (हरियाणा)

लिव-इन-रिलेशनशिप से अभिप्राय उस नई प्रथा से है जिसमें स्त्री व पुरुष बिना किसी वैवाहिक संबंधों के एक साथ रहते हैं । उन पर किसी प्रकार का कोई सामाजिक या कानूनी बंधन नहीं होता। वे केवल आपसी समझौते के आधार पर एक-दूसरे के साथ जीवन यापन करते हैं । उनके बीच यौन संबंध स्थापित होते हैं और वे संतानोत्पत्ति भी करते हैं । वे आर्थिक रूप से एक-दूसरे पर निर्भर नहीं होते और पढ़े-लिखे स्वतंत्र विचारों वाले लोग हैं । यह प्रथा देश के महानगरों से शुरू होकर बड़े-बड़े शहरों में आ पहुँची है । ये शहर औद्योगिक और शैक्षिक दृष्टि से विकसित होते हैं । यहाँ सामाजिक मान्यताओं, रीति-रिवाजों, विश्वासों के लिए कोई जगह नहीं होती । स्त्री पुरुष के सेक्स आधार पर इस तरह के संबंध ज्यादा नहीं चलते । गृहस्थी चलाने के लिए त्याग, संयम और सहनशीलता की आवश्यकता होती है और ऐसे रिश्तों में इसका अभाव पाया जाता है ।

21वीं सदी में हम संक्रमित संस्कृति के दौर में जी रहे हैं । अब जीवन का मतलब भोग एवं आनंद है । आज प्रत्येक व्यक्ति अपनी पारिवारिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियों से भागकर आनंद एवं मस्ती करना चाहता है । वह जीवन में अधिक से अधिक भोग, आनंद, एवं ऐश्वर्य चाहने लगा है। डॉ॰ ऋतु सारस्वत इस जीवन प्रथा को स्पष्ट करते हुए अपने लेख में लिखती हैं,

"विवाह का तात्पर्य दो विपरीत लिंगियों को कुछ सामाजिक व वैधानिक प्रक्रियाओं का निर्वहन कर साथ रहना ही नहीं, बल्कि दायित्वों का निर्वहन है, जहाँ त्याग, समझौते एवं प्रेम के साथ-साथ समर्पण भी है, पर आजकल युवा संस्कृति संक्रमण, भौतिकवादी दृष्टिकोण और असीम महत्वाकांक्षाओं के ज्वार में बहकर महानगरों से लेकर छोटे नगरों तक में विवाह संस्था की नींव में सेंध लगा रही है । युवा पीढ़ी अब बिना किसी समझौते के, दायित्व और त्याग के ही एक उन्मुक्त बंधनहीन जीवन जीना चाहती है । यही मसला सिर्फ युवा पीढ़ी की सोच का ही नहीं है बल्कि पारंपरिक वैवाहिक जीवन में बढ़ती जटिलताओं का भी है । उनके कानूनी बाध्यताओं के चलते जहाँ पुरुष विवाह के नाम से हिचकने लगे हैं वहीं स्त्रियों के लिए विवाह एकतरफा दायित्व का निर्वहन है, जहाँ सर्वाधिकार पुरुषों के पास हैं और उनके हिस्से में अंतहीन दायित्व । अपने-अपने दायरों को तोड़ने को आतुर युवा पीढ़ी को सहजीवन सहज और आसान राह प्रतीत हुई।"[1]

आज के युवावर्ग में सेक्स का आनन्द सर्वोपरि आनंद है । ऊँचे मूल्य ईश्वर, धर्म, राष्ट्र, सेवा, त्याग, वीरत्व और ब्रह्मचर्य आदि से गिरकर सबसे निचली सतह सेक्स पर आकर टिक गए हैं । भौतिक भोगवादी 21वीं सदी में सेक्स का झंडा बहुत बुलंदी पर है । आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के प्रसाद, शिक्षा-दीक्षा, अर्थ पर आधारित समाज-व्यवस्था, आबादी की बाढ़, युद्ध, बेरोजगारी, महंगाई, राजनीति और तरह-तरह के युगीन तनावों ने आज के आदमी को मानव के रूप में एक ऐसा सभ्य पशु बना

दिया है जिसने सेक्स को ही सर्वोच्च मूल्य मान लिया है । सेक्स के मूल्य रूप में प्रतिष्ठित होने के प्रभाव के बारे में डॉ॰ विनीता राय लिखते हैं,

"सेक्स के मूल्य रूप में प्रतिष्ठित हो जाने का सबसे बुरा प्रभाव विवाह-संस्कार पर पड़ा । अब उसके भीतर वैसी आध्यात्मिक पवित्रता का दर्शन आज का बुद्धिजीवी और यथाकथित सभ्य समाज नहीं कर रहा है । और-और व्यवसायों की भाँति विवाह भी एक जीवन-व्यवसाय बन गया है । वह नर-नारी का जन्म जन्मांतर का पवित्र नाता नहीं, आधुनिक जीवन का एक समझौता मात्र रह गया है। उसके पुराने रूप पर आज गहरा प्रहार हो रहा है । उसका सांस्कृतिक मूल्य ध्वस्त हो गया है । और-और परंपराओं की भाँति उसकी भी परम्परा टूट रही है। उसके भीतर से पवित्रतावाद विदा ले रहा है । एक सर्वथा नया समाज नये नारे के साथ आज उभर रहा है । नया नारा है मुक्त भोग का । इस नारे ने नारी का मूल्य घटा दिया है । इस प्रकार सेक्स के मूल्य रूप में प्रतिष्ठा के साथ समाज का पुराना ढांचा ही आज पूरी तरह चरमरा कर टूट रहा है ।"[2]

इस प्रकार सहजीवन अर्थात् लिव-इन-रिलेशनशिप युवाओं को आकर्षित कर रहा है । लिव इन रिलेशनशिप के प्रचलन का कारण भारतीय पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों का भार है । आज युवावर्ग अपने को स्वतंत्र मानता है और स्वतंत्रतापूर्वक जीवन जीना चाहता है । वह विवाह को एक बंदीगृह की तरह मानता है । डॉ॰ स्वाति तिवारी अपनी कहानी 'आजकल' में प्रतिमा के माध्यम से कहती हैं,

"आजकल विवाह एक रूढ़ि है - मात्र दो देह के मिलन की रस्में । जब देह बगैर रस्मोरिवाज के एकाकार है तो विवाह का बंधन क्यों?... जब तक चले, चलाओ, वरना आत्मा से उतार फेंको । अनचाहा बोझ नहीं चाहिए उन्हें ... रिश्तों का बोझ ।"[3] युवा वर्ग रिश्तों को बोझ मानकर चलने लगा है । लिव-इन-रिलेशनशीप की अवधारणा की मान्यता है कि स्त्री-पुरुष को पारंपरिक वैवाहिक रीति-रिवाजों को निभाने की आवश्यकता नहीं । कहानी 'आजकल' की नायिका प्रतिमा विवाह के समय किए जाने वाले रीति-रिवाजों को व्यर्थ करार देते हुए नकारती है । वह अपने प्रेमी प्रणव के साथ सहजीवन बिता रही है । उसकी माँ प्रणव से ही शादी करने के लिए उसको कहती है लेकिन उसका जवाब इस तरह था,

"क्या फर्क पड़ेगा शादी से? मुझे और प्रणव को साथ रहना है। हम प्यार करते हैं तो रिश्ता प्यार का हुआ न? भँवरों या फेरों का क्या है? यदि मैं प्रणव का हाथ थाम लूँ और तुम्हारे आस-पास घूमकर फेरे ले लूँ तो क्या तुम साक्षी नहीं हो । अग्नि के फेरे एक परंपरा है । आडम्बर से भरी। मैं रूढ़ियों को तोड़ रही हूँ । कल प्रणव मुझे बाध्य नहीं कर सकेगा अपनी मर्जी से हांकने के लिए, जैसे तुम्हें बाबूजी ने अपनी उंगलियों पर नचाया ... मैं पागल नहीं हूँ । मैं पत्नी बनकर गुलामी नहीं करना चाहती । तुम्हारी इन सदियों से चली आ रही रीति-रिवाजों की परंपराएं स्त्री-पुरुष को केवल एक-दूसरे को गुलाम बनाती है ।"[4]

इस नई प्रथा के अनुसार विवाह एक सामाजिक रूढ़ि है जो 21वीं सदी में समयानुकूल नहीं है । अतः युवा वर्ग इसे नकारने में ही अपनी भलाई समझने लगा है । केवल लड़कियां ही नहीं लड़के भी विवाह को नकार सहजीवन को प्राथमिकता देने लगे हैं । उनके अपने तर्क हैं। कमल कुमार की कहानी 'भारती' का नायक अपनी प्रेमिका द्वारा दिए गए शादी के प्रस्ताव को नकारते हुए कहता है,

"ऐसे भी तो ठीक है । तुम्हें आज एक राज की बात बताऊँ, आई हेट युमन एज ए वाइफ। पत्नी बनते ही उसका पूरा बेटाव, रफ, सिस हो जाता है । वह अक्टोपस में बदल जाती है । अपने कई-कई हाथों-पंजों से आदमी को दबोच लेती है और उसे लाश बना देती है।"[5] वह प्रेमिका के द्वारा दिए गए शादी के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करता । वह कहता है,